श्रीः

लंगड़ा खूनी

जासूसी-उपन्यास

काशी-निवासी

बाबू जयरामदास लिखित

और

प्रकाशित।

काशी।

नागेश्वर प्रेस में मुद्रित हुई।

फब्रुअरी सन् १९०७

प्रथम बार १००० मूल्य =)

पुस्तक मिलने का पता-बाबू जयरामदास राजघाट काशी।

NATIONAL LIBRARY
NO 10074
DATE 30.6.60
CALCUTTA
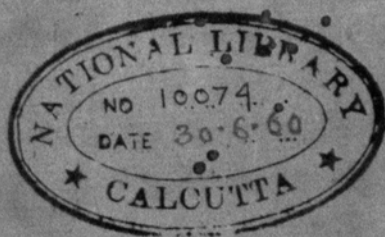
॥ श्रीः ॥

लंगड़ा-खूनी ।

जासूसी उपन्यास

पहिला भेद ।

" नांच की तैय्यारी । "

भोजन करके मैं अपनी प्यारी से अपने करनेलगंज (इलाहाबाद) वाले मकान में घुल घुल कर बातें कर रहा था कि, इतने में नौकर ने आकर मुझे एक चीठी दी, वह मेरे मित्र अजयसिंह (जासूस) की थी जिसमें निम्न लिखित बातें लिखी थीं:— " यदि तुमको कुछ दिनके लिए फुरसत हो तो, तुम चीठी देखतेहीं चले आओ क्योंकि मुझे एक खून के मामिले की तहक़ीक़ात के लिए बनारस जाना है । तुम्हारे साथ रहने से मुझे सब बातों का आराम रहता है । इसके अतिरिक्त तुम्हारे ऊपर मामले के सब भेद भी खुल जाते हैं, मैं यहां से डेरा सवा ग्यारह बजे कूंच करूंगा । "

जब मैं चीठी को पढ़ चुका तो मेरी प्यारी ने कहा— " प्यारे क्या तुम जाने को तैय्यार हो ? "

मैं—" प्यारी मैं इस बारे में ठीक ठीक नहीं कह सकता क्योंकि मुझे यहां भी बहुत से काम करने हैं "।

मेरी स्त्री—" यद्यपि इस समय बहुत से काम हैं, पर इन्हें तुम रघुनन्दन (मेरे नौकर का नाम था) पर छोड़ दो मेरी समझ में तुम्हारे लिए आबहवा का फेर बदल बहुत अच्छा होगा। क्योंकि आजकल तुम्हारे चेहरे की रंगत कुछ फीकी है। इसके अतिरिक्त अजयसिंहके मिलने से तुम्हें असीम प्रसन्नता प्राप्त होती है और तुम्हारा दिल भी बहल जाता है।"

मैं—" इसमें सन्देह ही क्या है (तय्यारी का हाल कहते हुए) अच्छा चलने की तैयारी करता हूं।

" मैं झट से आवश्यकीय चीज़ों को बांध बूंध कर, फिटन पर सवार होके इलाहाबाद के इस्टेशन पर आ धमका। मेरा परम हितैषी-मित्र अजयसिंह प्लाट-फार्म पर, मेरे इंतजार में टहल रहा था, अजयसिंह मुझे देखतेही कहने लगा,—"विजयसिंह! तुमने बहुत अच्छा काम किया। तुम्हीं एक ऐसे मेरे मित्र हो जिसपर मैं भरोसा रख सकता हूं। अच्छा! तुम किसी खाली गाड़ी में जगह देखो तबसे मैं टिकट ले आऊं।"

"यह कहकर अजयसिंह तेज़ी से गया और टिकट ले आया। हम दोनों गाड़ी में सवार हो गए। थोड़ी देर के बाद अजयसिंह ने अपने जेब से बहुत से कागज़ निकाले

और उनको पढ़ना आरम्भ किया। फिर एकाएक उन सभों को लपेटकर एक कोने में रख दिया और कहा,—विजय सिंह! क्या तुमने इस मामले का हाल सुना है?"

मैं—"कुछ भी नहीं! मैंने दो चार दिन से कोई समाचार पत्र भी नहीं पढ़े।"

अज०। "अखबारों ने इसका कुछ हाल नहीं लिखा है। परन्तु जहां तक मैं समझता हूं यह मामला पेंचीला सा जान पड़ता है।"

मैं—"क्या इसमें से चालाकी की महक निकलती है?"

अज०। "हां, जिस मामले में चालाकी की महक निकलती है, उसे सर करने में भी कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं। इस मामिले में मृतक के बेटे के विरुद्ध एक मामला खड़ा किया गया है।"

मैं—"क्या लड़का वास्तव में अपने बाप का क़ातिल है।"

अज०। "हां, लोगों का ख्याल तो ऐसाही है। पर मैं तुमसे उन बातों को बयान करता हूं जिसका कि मैं ने अबतक छान बीनकर पता लगाया है।"

"बनारस के ज़िला में कपिलधारा एक गांव का नाम है। इस गांवका सबसे बड़ा जमींदार हरिहरसिंह है जिसने अपने कौशल से, कलकत्ते में जाकर बहुत सा धन कमाया था थोड़े दिन हुए वह अपनी जन्म-भूमि को लौट

आया । उसने अपने जमींदारी का थोड़ा हिस्सा विश्वनाथसिंह को दे रक्खा था इससे अब विश्वनाथसिंह भी उसका हिस्सेदार हो गया है, विश्वनाथसिंह को केवल एक लड़का है जिसकी आयु लगभग अट्ठारह वर्ष की होगी । हरिहरसिंह को कोई लड़का नहीं है किन्तु उसी के (विश्वनाथसिंह के) लड़के के उम्रकी एक लड़की है। परन्तु इन दोनों (हरिहर व विश्वनाथ) में से किसीकी स्त्री जीवित नहीं है और दोनों रंडा कहलाते हैं । हरिहर सिंह ने अपनी स्त्री के मरने के बाद अपना चाल ढ़ाल बिलकुल बदल दिया । परन्तु विश्वनाथसिंह और उसका लड़का घुड़दौरों, ठेटरों, तमाशों और मेलों में खूब रूपया उड़ाया करते थे। विश्वनाथसिंह के यहां केवल दो नौकर हैं जिसमें एक मर्द और एक औरत है किन्तु इसके विरुद्ध हरिहरसिंह के यहां छः पुरुष और स्त्री नौकर हैं । जैसा कि, आगे चलकर बयान करूंगा । तीन जून को, तीन बजे, विश्वनाथसिंह बरूणा नदि की तरफ गया और उधर से फिर जीवित न लौटा । ”

“ विश्वनाथसिंह के रहने के स्थान से बरूणा नदि पाव मील की दूरी पर है । उस समय, जबकि, वह उधर को जा रहा था, दो आदमियों ने उसे देखाथा । जिनमेंसे एक तो औरत है, जिसका कि नाम मालूम नहीं और दूसरा एक आदमी है जिसका नाम गिरधारी है, जो हरिहरसिंह के यहा

ग्वाले का काम करता है। वह कहता है कि, विश्वनाथसिंह अकेला जा रहा था किन्तु एक दूसरे आदमी का बयान है कि, विश्वनाथसिंह के चले जाने के बाद उसका लड़का (महादेव सिंह) भी अपने कंधेपर बंदूक रक्खे हुए उसी तरफ जा रहा था। अतएव उसने बापको देखा तो और तेज़ी के साथ कदम उठाना आरम्भ कर दिया इसके बादके वृतान्त उसे मालूम नहीं।"

"जब वे दोनों उसकी दृष्टि से गायब हो गए तो उन्हें एक लड़की ने देखा जो उस नदि के दूसरे किनारे पर फूल तोड़ रही थी। उस लड़की का बयान है कि वे दोनों अर्थात् बाप बेटे परस्पर कड़ाई से बात चीत कर रहे थे। विश्वनाथ सिंह अपने लड़के को घृणीत शब्दों से तिरस्कारित कर रहा था। महादेव ने अपने बाप को मारने के लिए जब हाथ उठाया तो वह लड़की भयातुर होकर वहां से भागी और अपनी मां के पास जाकर सब हाल कहने लगी। इतने में महादेव दौड़ा हुआ आया और बोला—"मैंने अपने बापको नदिके किनारे मरा पाया है,। मैं तुम्हारी सहायता चाहता हूं।" इस समय वह बदहवास सा हो रहा था। न उसके सिर पर पगड़ी थी न हाथ में बंदूक किन्तु उसका बांया हाथ खून से तरातर था जब उसने जाकर देखा तो, विश्वनाथसिंह नदि के किनारे घास पर मरा पड़ा था, उसके सिर के चोटों और गहरे घावों से

मालूम होता था कि महादेव ने उसे अपने भारी बंदूक के कुंदे से मारा है, जो उससे थोड़ी दूर घास पर पड़ी हुई थी। इन बातों से महादेव अपने बाप के खून के दोष में गिरफ्तार कर लिया गया है।"

मैं—"मेरे मित्र ! इन बातों से तो यही मालूम होता है कि, निस्सन्देह लड़का अपने बाप का खूनी है।"

अज०। "हां भाई इन बातों से तो ऐसाही प्रतीत होता है, पर जब तुम दूरदर्शिता से काम लोगे तो तुम्हें इसका वास्तविक मालूम हो जायगा। यह सब मामिले ऐसे धोके से मिले रहते हैं कि जो कुछ ऊपरी तौर से मालूम होता है प्रायः उसका परिणाम उसके विरूद्धही निकलता है। यद्यपि इस समय महादेव को विश्वनाथ का खूनी समझकर उसपर मुकदमा बड़े जोर शोर से चलाया गया है, परन्तु कई साक्षियों से-जो इसके विरुद्ध हैं—जिनमें एक हरिहरसिंह की लड़की की भी गवाही है जिसने अपनी तरफ से एक वकील भी किया है, मामले का रंग कुछ दूसराही हो जाता है।"

मैं—"मेरे देखने में तो यह मामला सत्य मालूम होता है, देखें तुम इससे क्या परिणाम निकालते हो।"

अज०। वाह ! तुमने खूब परिणाम निकाला। पर मैं दावे से कह सकता हूं कि इस मामले को एक मिन्ट में असत्य ठहरा सकता हूं और उसको (मुकदमें को) "ऐसी

दशा में पहुंचा सकता हूं जिसे ये जरा भी नहीं समझ सकते। परिणाम निकालने की कौन कहे।"

मैं-"तो फिर—"

अज०। "तो फिर क्या? मित्र मुझे अच्छी तरह मालूम है कि, तुम नित्य प्रातःकाल हजामत बनवाते हो परन्तु जब मैं देखूंगा कि, तुम्हारे एक तरफ के गालों पर के बाल अच्छी तरह साफ नहीं हुए हैं तो मुझे मालूम हो जायगा कि, इसमें हज्जाम की भूल है या हज्जाम के छूरे की। ऐसा कहने से मेरा यह मतलब है कि, ऐसे मामले बहुत से बनावट के होते हैं। क्या आदमी उनसे अपना काम अर्थात् बनावट से नहीं निकाल सकता? अतएव, दो बातें ऐसी और भी हैं जो पुलिस कोर्ट से दरियाफ्त की गई हैं और ध्यान देने के योग्य हैं।"

मैं-" वह क्या?"

अज०। "यह तो विदित होही चुका है कि महादेव खून करते नहीं पकड़ा गया है, किंतु उसकी गिरफ्तारी थोड़ी देर बाद हुई। और जब पुलिस इंसपेक्टर ने उससे कहा था कि "अब तुम्हे बाहर की हवा खाने को नहीं मिलैगी" तो उसने लापरवाही से जवाब दिया कि, "मैं यह सुनकर जरा भी भयभीत नहीं होता और न मुझे इसके लिए किसी किस्मकी तरद्दुद की जरूरत है।" इस जवाब का प्रत्युत्तर यह हुआ कि, वह तमाम शकें, जो

हाकिम के दिलपर बाकी रह गई थीं एकाएक दूर हो गई।"

मैं—"इन बातों से साफ साफ यही मालूम होता है कि, महादेव ने अपने मुंहही से अपने अपराध को स्वीकार कर लिया।"

अज०। "कदापि नहीं।"

मैं—"क्यों।"

अज०। "इससे कि, यदि वह अपराधी होता तो अपनी गिरफ्तारी पर आश्चर्य्य और बहाना करता, न कि ऐस खुर्राटी से जवाब देता। सच्च तो यह है कि ऐसे खुर्राटेदार जवाब देने वाला व्यक्ति या तो बिलकुल बेकसूर, या चंचल मिजाज़, या अव्वल दरजे का पालिसी दार होता है। ग़ौर करने से यह मालूम हो सकता है कि, उसका अपने मृतक बापके पास खड़ा रहना क्या उसके हार्दिक-पित्र-भक्ति को नहीं प्रकाश करता है? भला फिर कब उससे ऐसा कठिन कृत्य हो सकता है? और उस लड़की की गवाही से यह मालूम होता है कि, वह अपने बाप को मारने के लिए हाथ उठाए था। यह कदापि सत्य नहीं हो सकता। मैं उसके इज़हार और बातचीत से यही परिणाम निकालता हूं कि, वह कदापि अपराधी नहीं है।"

"इन बातों को सुनकर मैंने अपने कंधो को हिलाकर कहा,—"मैं बहुत सी नजीरें ऐसीही पेश कर सकता हूं, कि

बहुत से लोग, थोड़े लोगोंहीं की गवाही पर फांसी चढ़ा दिए गए हैं।"

अज०। "निस्सन्देह! परन्तु उसमें बहुत से ऐसे भी हैं जो निरपराध फांसी पर लटकाए गए हैं।"

मैं—"पहिले यह तो देखिए कि महादेव का क्या बयान है?"

अज०। "मुझे सन्देह है कि उसके बयान, उसके हक़ में अच्छे नहीं हैं, परन्तु दो एक बातें और नुक़ते ऐसे हैं कि जो विश्वास के योग्य नहीं हैं।"

"यह कहकर अजय सिंह ने एक कागज़ निकाल कर दिया जिसपर मैंने निम्न लिखित इजहार पाया।"

❁ दूसरा-भेद ❁

"महादेव के इजहार की नक़ल"

"मैं इस दुर्घटना के तीन दिन पहिलेहीं गाज़ीपूर को चला गया था, ठीक उसी दिन अर्थात् तीन तारीख़ को घर लौट आया। घर में आने पर मुझे मालूम हुआ कि, मेरा बाप, जयगोविंद सईस के साथ कहीं बाहर गया हुआ है। थोड़ी देर बाद वह अपनी गाड़ी पर सवार हाते में आया और तुरंत गाड़ी पर से उतरकर कहीं चला गया इसके बाद, मैं अपनी बंदूक लेकर नदि के किनारे, मुर्गाबी

की तलाश में गया । जैसा कि गिरधारी ने अपनी साक्षी में लिखवाया है । किंतु उसका वह बयान बिलकुल असत्य है कि मैं अपने बाप से थोड़ी दूर पर जा रहा था और मुझे इस बात का गुमान भी न था कि, मेरा बाप आगे २ जा रहा है । नदि से, जब मैं सौ कदम की दुरी पर था तो, मुझे " कूई " की आवाज़ सुन पड़ी । जो मेरे और मेरे बापके बीचमें, बुलाने का एक गुप्त शब्द है । यह आवाज़ सुनतेहीं मैं नदि की तरफ दौड़ा और अपने बाप को नदि के किनारे खड़ा देखा । मुझे देखतेहीं उसने आश्चर्य्य के चिन्ह प्रगट किए और धीरे धीरे कहना प्रारम्भ किया,—" तुम यहां क्या कर रहे हो ?" इसी किस्म की धीमी और कड़ी बातों ने दंगा कुश्ती की नौबत पहुंचाई । यह दशा देखकर कि, क्रोधाग्नि धधकने चाहती है, मैं शीघ्र ही घर की तरफ़ लौटा । लगभग डेढ़ सौं कदम की दूरी पर गया होगा कि, पीछे से एक चीख़ की आवाज़ सुनाई पड़ी । जिसने मुझे पुनः पीछे लौटने पर बाध्य किया । वहां पहुंच कर क्या देखता हूं कि बाप ज़मीन पर पड़ा तड़प रहा है और उसके सिरमें एक भारी चोट लगी हुई है । मैंने बंदूक को ज़मीन पर फेंक दिया और पिता को अपने हाथों से उठाने लगा कि, उसका दम निकल गया । थोड़ी देरतक मैं मुर्दा बाप के शवके ऊपर झुका हुआ रोता रहा, फिर पास के झोपड़े में (जैसा कि लड़की

ने बयान किया है) सहायता के लिए गया । लौटती बार मैंने किसी आदमी को वहां नहीं देखा । इससे ज्यादा मैं और कुछ नहीं जानता ।”

पुलिस अफसर । “मरने के पहिले विश्वनाथ ने तुमसे कुछ कहा था ?”

महा० । “उसने कुछ कहे थे, पर मैं उनमें से एक का भी मतलब नहीं समझ सका था ।”

पु०अ० । “क्या तुमने उनमें से एक शब्द को भी नहीं समझा ।”

महा० । “नहीं मैं एक लफ़ज के भी माने नहीं समझ सका ।”

पु०अ० । “तुम्हारे उस झगड़े का क्या अभिप्रायथा?”

महा० । “मैं इसका उत्तर देना उचित नहीं समझता ।”

पु०अ० । “तुम्हें जरूर बतलाना होगा ।”

महा० । “यह सम्भवही नहीं । और तुम्हें इस बारे में कुछ पूछनाही नहीं चाहिए क्योंकि खूनका इससे कोई सम्बंधही नहीं है ।”

पु०अ० । “इस बात का इस खून से कोई सबंधही नहीं है, यह बात तो अदालत के सामने मालूम होगी परन्तु हाकिम के किसी प्रश्न का उत्तर न देना अपने आप मुजरिम बनाना ।”

महा० । “क्या मैं आपकी इस धमकी से बतला दूंगा ।”

पु०अ० । "अच्छा न सही । मैं समझता हूं कि, "कूई" तुम लोगों का एक गुप्त शब्द है ।

महा० । "निसन्देह ।"

पु०अ० । फिर यह कैसे हो सकता है कि, उसने बिना देखे या देखनेके पहिलेहीं इस गुप्त शब्द का प्रयोग किया जब कि, उसको मालूम भी न था कि महादेव गाज़ीपुर से लौट आया है या नहीं ।"

महा० । "(जरा ठहरनेके बाद) मुझे मालूम नहीं।"

पु०अ० । "जब तुमने अपने बाप को इस प्रकार बिगड़े दिल पाया तो क्या तुम्हें और किसी के उपस्थित होने का ख्याल नहीं आया था ?"

महा० । "मुझे अच्छी तरह मालूम नहीं ।"

पु०अ० । "तुम्हारे इस बात का मतलब क्या है ।

महा० । "मैं उस समय ऐसा बदहवास हो रहा था कि मुझे अपने बापके अतिरिक्त और किसी का गुमान भी नहीं हुआ । और जब मैं लौटा आ रहा था तो मुझे ख्याल आता है कि, मैंने अपनी बाई तरफ किसी भूरी चीज़ को पड़ा देखा था और जब वहां से उठा तो कोई चीज़ नहीं दिखाई पड़ी ।"

पु० अ० । "मानो इससे तुम्हारा मतलब है कि, तुम्हारे मदद लेने जाने के पहिलेहीं वह चीज़ गायब हो गई थी ।"

महा०। "हां, निस्सन्देह।"

पु०अ०। "तुम्हारी रायमें वेह क्या चीज़ रही होगी।"

महा०। " मैं नहीं कह सकता।"

पु०अ०। "तुम्हारे बाप से वह कितनी दूर पर थी?"

महा०। " कोई दस बारह गज़ की दूरी पर।"

पु०अ०। " नदि से वह कितनी दूर थी?"

महा०। " लगभग उतनाहीं, जितना कि बाप से।"

पु० अ०। " मानो जिस समय वह चीज़ गायब हुई थी तुम उससे दस बारह गज़ की दूरी पर थे।"

महा०। " हां, किंतु मेरी पीठ उसी तरफ थी।"

"जिस समय मैं इज़हार को पढ़ चुका तो अजयसिंह जासूस बोल उठाः—"मित्र! वह सब यही है जो कुछ उन जाहिल अफसरों ने दरियाफ्त किया है।"

मैं—"अजयसिंह! इन इज़हारोंके पढ़नेसे मुझे यह मालूम होता है कि, जिस समय उन अफसरों ने अपनी पूछ तांछ समाप्त की थी उस समय वे सब उसके विरुद्ध थे। विश्वनाथ का महादेव को बिना देखे बुलाना और महादेव का अफसर पुलिस को, अपनी भेद भरी बातों को न बतलाना। यह सब बातें ऐसी हैं जो महादेव के लिए बहुतही बुरी हैं।"

" इस पर अजयसिंह ने अट्टहास लगाकर कहा कि, " मुझे तुम और उन जाहिल अफसरों पर बड़ी हंसी

छुटती है । मैं उसके (महादेव) बयानही को ठीक समझकर तहक़ीक़ात शुरु करूंगा और देखूंगा कि मेरा विचार कहां तक सच निकलता है । किंतु अब मैं इस मामिलें के बारे में एक शब्द भी नहीं कहूंगा जबतक कि बनारस के स्टेशन पर न पहुंच जाऊं ।"

तीसरा भेद

"हरिहर-नन्दनी ।"

"कोई सवाचार बजे मुगलसराय जंकसन से होता हुआ मैं बनारस के स्टेशन पर पहुंचा जहां एक ठाटदार आदमी भिड़े सी आँख लिए, प्लाटफ़ार्म पर इंतजार कर रहा था यद्यपि उसके वस्त्र उसे पहिचान न पड़ने देने के लिए अनेक यत्न कर रहे थे । परंतु तिसपर भी मैंने उसे साधारण तौर से पहिचान लिया कि, यह पुलिस का एक बड़ा अफ़सर है । इसके साथ मैं और अजयसिंह डाक-बंगला में ठहरे जहां मेरे वास्ते एक स्वच्छ कमरा खाली कर दिया गयाथा।"

"जलपान इत्यादि कर लेने के बाद उसबड़े अर्थात् 'भेड़िया' नामधारी अफ़सर ने कहा:—

"मुझे पूरी तौर से मालूम है कि, जबतक तुम मुकद्दमें की पूरी तौर से छानबीन नहीं कर लेते तबतक नहीं मानते । इससे तुम्हारे आनेकी खबर सुनकर मैं स्टेशन पर

गया था और गाड़ी का भी इंतजाम कर रक्खा है।"

जासू०।"चन्द्रदेव की तो साफ रोशनी है, क्या पैदल चलने में कठिनाई होगी ?"

भेदि० । "यह तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है। परन्तु मैं कहता हूं कि, मामला बिलकुल साफ है। जैसी गहरी दृष्टि से देखो वैसाही साफ दिखलाई पड़ता है। अब इस में विशेष छानबीन की आवश्यकता नहीं है। जिमींदार हरिहरसिंह ने तुम्हारा नाम सुना था इससे वे तुम्हारी सम्मति भी मालूम करना अवश्यकीय समझते हैं। यह लीजिए उनकी गाड़ी भी दरवाजे पर आ गई।"

"यह शब्द भेदिया पुरापुरा कहने भी न पाया था कि, एक नवयोवना बुरका पहिने हुए आई, जिसकी आँखें उसके भीतर से चाँदकी तरह चमक रही थीं और बोलीः- "बहादुर अजयसिंह ! मुझे तुम्हारे आने से बड़ी खुशी हुई। मेरे देखने में महादेवसिंह बिलकुल निरपराध है और मैं चाहती हूं कि, तहक़ीक़ात करने के पहिलेहीं तुमको सब बातें बतला दी जांय। मैं उसके स्वभाव को बचपन-हीं से जानती हूं। वह इतना कोमल हृदय है कि, एक मक्खी को भी हानि नहीं पहुंचाना चाहता। भला जब वह ऐसा है तो आप स्वयं समझ सकते हैं कि, उससे इतना भयानक काम कैसे हो सकता है। वास्तव में यह सब बिलकुल झूठ है।

अज०। "हरिहर-नंदनी! तुम्हें अभी सब कुछ मालूम हो जाता है घबराओ नहीं मेरे पर बिश्वास रक्खो"

हरि०नन्द०। "लेकिन अजयसिंह! तुमने सब बातों को सुन लियाही होगा और उसका परिणाम भी निकाल लिया होगा। क्या वह तुम्हारे देखनेमें बिलकुल निरपराध नहीं है?"

अज०। "क्यों नहींहै वह बिलकुल साफ और बरीहै"

"इसपर हरिहरसिंह की लड़की प्रसन्नता से उछल पड़ी और कहने लगीः—"निस्सन्देह तुम्हारा बिचार सत्य और यथार्थ है। उसके और उसके बापकी तकरार होनेकी सबब मैं जानती हूं जिसे वह पुलिस अफसर को नहीं बतला सका क्योंकि वह मेरे संबध की बात है।"

अज०। "तुम्हारा सबंध! वह कैसा?"

हरि०नंद०। "मुझे तो अब तुमसे कोई बात छिपानेकी आवश्यकता नहीं मालूम पड़ती तो भला मैं क्यों छिपाऊं। विश्वनाथ और महादेव में सदा खटपट रहा करती थी। विश्वनाथ चाहता था कि वह मुझसे शादी कर ले, किंतु वह मुझे बहिन की भांति चाहता है। मुझे बिश्वास है कि यह खटपट भी किसी ऐसेही बात की होगी।"

अज०। "क्या तुम्हारा बाप इस सबंध पर राजी था?"

हरि०नंद०। "नहीं, विश्वनाथ के अतिरिक्त कोई इस बात पर राजी नहीं था।"

"यह कहकर हरीहरसिंहकी लड़की चुप होगइ क्योंकि जासूस कुछ सोंचने लग गया था । "

अज० । "तुम्हारे इस प्रकार सूचित करने से मैं बहुत प्रसन्न हुआ । क्या मैं कल तुम्हारे बाप से मिल सकता हूं ?"

हरि०नंद० । "मुझे सन्देह है कि, डाक्टर उसे आज्ञा नहीं देगा ।"

अज० । "डाक्टर !"

हरि०नंद० ।"हां, क्या तुम्हें नहीं मालूम कि, बेचारा बाप बहुत दिन से बिमार है । "

अज० । " अच्छा हरिहर नंदनी ! मैं तुमको असंत प्रसन्नता से धन्यवाद देता हूं कि, तुमने मुझे एक आवश्यकीय विषय से सूचित किया ।"

हरि०नंद० । मुझे पूर्ण आशा है कि, तुम महादेवसिंह को अवश्य बंदीगृह में देखने जाओगे और उसको सूचित कर दोगे कि, तुम बिलकुल निरपराध हो और शीघ्र छोड़ दिए जाओगे ।"

अज० । "निसन्देह ! मैं अवश्य उसे सूचित कर दूंगा ।"

हरि०नंद । " अच्छा अब मुझे घर जाना चाहिए क्योंकि बाप बहुत बिमार है । ईश्वर आपकी सहायता करे और आप यश प्राप्त करें ! "

" इन शब्दों के साथ हरिहर की लड़की एक आह भर कर दरवाजे से निकलकर गाड़ी पर जा बैठी और मुझे उसके गाड़ी के पहियों की गड़गड़ाहट सुनाई पड़ी । "

चौथा भेद

"खूनी कौन है।"

"हरिहर की लड़की के चले जाने के बाद 'भेदिया' कहने लगाः—"मिस्टर अर्जयसिंह ! जैसा मैंने कहा था वैसा-ही तुमने भी अपने कानों से सुन लिया।"

अज०। (बात टालते हुए) "हां अब मैं कैदी को देखना चाहता हूं, क्या तुम वहां चल सकते हो?"

भेदि०। हां, क्यों नहीं, पर केवल हमीं और तुम।"

अज०।"अच्छा ऐसा ही सही। विजयसिंह ! कदाचित यह बात तुम्हें बुरी मालूम हुई हो, परन्तु विश्वास रक्खो कि, मैं दो घंटे में लौट आऊंगा।"

मैं—"अच्छा यही सही। यह कहकर मैंने एक जासूसी उपन्यास उठा लिया और वे लोग चलते बने। इस उपन्यास का प्लाट ऐसा विचित्र और कहानी ऐसी पेंचीली और मनोरंजक थी, जोकि, इसी मुकदमें से बहुत मिलती थी। इस कहानी के ध्यान ने मुझे ऐसा मुग्ध कर लिया कि, मैंने उपन्यास को तो टेबुल पर रक्ख दिया और स्वयं इसी बीते हुए मुकदमें पर विचार करने लगा "यदि वास्तव में उस नवयुवक का कहना सत्य है तो, उस समय जब कि, वह अपने बापकी चीख सुन कर पीछे को दौड़ा होगा तो उसके हृदय में एकाएक कैसे भयानक ध्यान प्रवेश कर

गए होंगे। क्या मेरी बुद्धि इन विषयों में पता नहीं लगा सकती ?" यह सोचकर मैंने एक घंटी बजाई और एक ख़ास नक़ल के लिए हुक्म दिया, जिसमें इस मामिले की कार्य्यवाही के शब्द२ लिखे हुए थे। "सारिजन (डाक्टर) की जांच में यह घाव बड़ा भारी था, जो सिर के पिछले तरफ था, और जिससे साफ साफ मालूम होता था कि, यह घाव पीछे की तरफ़से लगाया गया होगा। यही एक साक्षी महादेव के लिए उपयोगी थी। क्योंकि जब महादेव अपने बाप से हाथा बाहीं कर रहा था, तो उसके सामने था, न कि पीछे ! किंतु एक बात, यह भी हो सकती है कि शायद उसके बापने चोट खाने के पहिलेहीं उसकी तरफ पीठ फेर दी हो। एक और बात महादेव के बयान से ध्यान में आती है कि, उसने (महादेव) जो भूरी रंग की चीज़ दस बारह गज़ की दूरी पर देखा था, सम्भव है कि, वह मारने वाले का कोट रहा हो जो दौड़ने में गिर गया हो, और जब महादेव की पीठ उस तरफ थी तो वह, उसे उठाकर ले गया हो।"

"इसी प्रकार के अनेक ध्यान उत्पन्न होते और मिट जाते थे परन्तु सत्य तो यह है कि यह मामला बड़ा पेंचीला था और ऐसा आज तक मैंने देखाही नहीं था।"

"इन विचारों के उठने और गिरने में बहुत देर लग गई कि इतने में अजयसिंह लौट आया, किंतु इस समय भेदिए को वह कहीं छोड़ आया था और बोलाः—"खबर

तो बिल्कुल साफ है। इससे मैं चाहता हूं कि, आज की थकावट यहांही उतार लूं और कल सवेरे जांच को चलूं।

मैं—"क्या तुमने महादेव को देखा?"

अज०। "हां।"

मैं—"उसने कुछ बतलाया भी?"

अज०। "कुछ नहीं।"

मैं—"तुम क्या कुछ भी नहीं मालूम कर सके?"

अज०। "मालूम करना क्या? पहिले मैं यह समझता था कि खूनी उन दोनों (आदमी, औरत) में से कोई होगा परन्तु मेरा विचार भी असत्य निकला, क्योंकि वह भी, और लोगों की तरह सन्देहही की दशा में है। भाई! बात तो अस्ल में यह है कि महादेव हरिहरसिंहकी लड़की से असीम प्रेम रखता है, किन्तु उससे वह शादी करना नहीं चाहता। परन्तु विश्वनाथसिंह सदा से यह चाहता था कि, महादेव उससे विवाह कर ले और जब हरिहर-सिंह मरे तो उसके अपार धन और सम्पत्ति का मालिक बन बैठे। इसी कारण से, विश्वनाथसिंह के अतिरिक्त कोई इस विवाह से प्रसन्न नहीं था। अन्त में जब मैं इन बातों को बीच में रखकर परिणाम निकालता हूं तो महादेव को निरपराध पाता हूं।"

मैं—"भई महादेव खूनी नहीं है तो है कौन?"

अज०। "खूनी कौन है! इस प्रश्न के उत्तर के लिए

में तुम्हारा ध्यान उस तरफ (जहां खून हुआ है) दौड़ाता हूं कि, पहिले वह (विश्वनाथ) नदि के किनारे अवश्य किसी से मिलने गया था जैसा कि पहिले बयान हो चुका है और उसका मुलाकाती उसका बेटा नहीं था, क्योंकि उसे तो खबर भी न थी कि, महादेव गाज़ीपूर से लौट आया है या नहीं। दूसरे यह कि, उसके मुंह से "कूई" के शब्द निकले थे, इससे परिलक्षित होता है कि, उसको अपने लड़के के लौट आने कि, बिलकुल खबर न थी। यह दो बातें ऐसी हैं कि, जिस पर मुकदमा का पूरा पूरा भार है। अब हम लोगों को कोई दूसरी बात करनी चाहिए जिससे दिल बहले।"

"दूसरे दिन सबेरे, कोई नई खबर नहीं सुनाई पड़ी। लगभग नव बजे भेदिया हम लोगों के लिये गाड़ी लेकर आया। जिस पर सवार होकर हम लोग कपिलधाराके लिए रवाना हो गए।"

भेदि०। "आज प्रातःकाल, एक बड़ी बुरी खबर आई है कि, मिस्टर हरिहरसिंह बहुत बिमार हो गए हैं और अब उनके जीने की आशा नहीं है।"

अज०। "अच्छा कोई परवाह नहीं वह एक बुड्ढा आदमी है।"

भेदि०। "हां उसकी अवस्था तो साठ वर्ष के लगभग की होगी, किन्तु उसका जी[illegible]

सदा दुखित मय रहा करता है उससे और विश्वनाथसिंह से परले दर्जे की मित्रता थी और मैं कह सकता हूं कि वह उस पर बड़ा दयालु था क्योंकि उसने अपनी जिमींदारीका बहुत हिस्सा विश्वनाथसिंह को मुफ्त दे दियाथा।"

अज०।"यह बातें उसकी योग्यता प्रकाशित करतीहैं।"

भेदि०। "यही नहीं। किन्तु उसने विश्वनाथ के साथ और भी बहुतसे काम किए हैं जिसको सब कोई जानता है।"

अज०। "भई तब तो बड़े आश्चर्य की बात है कि,हरिहरसिंह के इतना कर देने पर भी विश्वनाथसिंह यही चाहता था कि, महादेव उसकी लड़की से विवाह करके सब-मालजाल का मालिक बन बैठे! दुनिया बड़ी मतलबी और लालची होती जाती है!! भेदिया! क्या तुम इन बातों से कुछ पता नहीं लगा सकते?"

भेदि०।"कुछ भी नहीं। मुझसे इससे मतलबही क्या है, मैंने तो छानबीन कर यही पता लगा लिया है कि अपने बापका खुनी महादेवही है और कोई नहीं।"

अज०।"खैर कुछही क्यों न हो। यदि मैं भूलता नहीं हूं तो यही मकान विश्वनाथसिंह का है।"

भेदि०। "जी हां, यही है।"

इतने में सब लोग मकान के दरवाजे पर पहुंच गए और अजयसिंह की आज्ञा से मृतक (विश्वनाथसिंह) और कैदी (महादेवसिंह) के जूते लाए गए। जासूस (अजयसिंह) ने

सात आठ जगहों से बूटों को ध्यान पूर्वक नापा। तदनन्तर सब लोग नदि की तरफ चल दिए।

पांचवां भेद

"दुर्घटनास्थल की जांच।"

"इस समय अजयसिंह का चेहरा विचारों की रौंद से लाल हो गया था, और वह इस मामिले की जांच में दिलोजान से परिश्रम कर रहा था। उसके भवों में दो काली काली लकीरें पड़ गई थीं। जिस समय उसने अपना मुंह पृथ्वी पर झुकाया था उस समय उसकी आँखें मोमबती की तरह जल रही थीं और उसके नाक से ऐसी हवा निलक रही थी कि मानो वह अपने शिकार को सुंघ रहा है।"

"इसी प्रकार, वह तेज़ीके साथ आगे २ जा रहा था यहां तक कि हम लोग बरूणा नदि के किनारे पहुंच गए। नदि का किनारा नम था। किनारे के आस पास कई मनुष्यों के पद चिन्ह दिखलाई पड़े। अजयसिंह किसी स्थान पर तेज़ी के साथ चल पड़ता, और कहीं बुत्त बन कर खड़ा हो जाता, और किसी समय बड़ी तेजी के साथ इधर उधर घुमने लग जाता था। इससे "दो मुल्लाओं में मुर्गी हलाल" होने वाली कहावत चरितार्थ होती थी।

क्योंकि दोनों जासूसों के दो मत थे। किसी का ख्याल कुछ था और किसी का कुछ। मेरी दृष्टि, अपने मित्र की तरफ थी।.वह पद चिन्हों को घूर घूर कर देखता था।"

"बरुणानदि, कुरहर के बाग से मिली हुई पचीस गज़ के लगभग चौड़ी होगी। दुर्घटना स्थल सूखे कीचड़ों और वृक्षों से से ढंका हुआ था। नदि के किनारे से कोई बीस कदम की दूरी पर रौंदी हुई घास दिखलाई पड़ी। भेदिए ने मुझे वह स्थान बतलाया जहां मुर्दा पाया गया था। अजयसिंह के ध्यान आँखों से प्रतीत होते थे कि वह रौंदे हुए घास के एक एक तिनके की खूब जांच कर रहा है। थोड़ी देर पर्य्यंत इसी प्रकार जांच करने के बाद वह भेदिया से कहने लगाः—"तुम नदि की तरफ क्यों गए हो?"

भेदि०। "मैं यह जानना चाहता था कि, शायद किसी किस्म का कोई ...."

अज०। (भेदिए की बात काटकर) "किंतु मैं नहीं क्या? मेरे पास इतना समय नहीं था, नहीं तो मैं पुलिस अफसरों के पहिले ही आकर मुकदमे को हल कर डालता जो भेड़ों के गल्ले की तरह आकर यहां इकट्ठा होगए थे, और सात आठ कदम तक के सब निशानों को ढांक दिया है। देखो यह तुम्हारे ही पैर के चिन्ह है न जो बराबर चले गए हैं।"

"यों कहने के बाद, उसने अपनी दूरबीन लगाई

और बहुत ध्यान से इधर उधर देखने लगा और पुनः बोल उठाः--"यह देखो ! महादेव के पद चिन्ह हैं। वह दो बार चला है। एकबार धीरे धीरे और दूसरी बार तेजी के साथ। क्योंकि इन चिन्हों में उसके एड़ियों की नीशानियां हैं और पांव के अगले भाग भी उगे हुए हैं। और यह विश्वनाथसिंह के पैर के चिन्ह हैं जब वह इधर उधर फिर रहा था। और यह महादेव के बंदूकके चिन्ह हैं, जब कि वह अपने बापकी घुड़कुनियां सुन रहा था। ओह! यह कैसे भद्दे और मोटे पांव के चिन्ह !!! यह देखो एक बार गया है और फिर लौट आया है! हां ठीक !! इन चिन्हों का मालिक पुनः अपना कोट लेने के लिए आया होगा !!!"

" इसी प्रकार वह देखता और घुमता हुआ झाड़ियों के किनारे जा पहुंचा, जहां एक बहुत बड़ा वृक्ष लगा हुआ था। इसके समीप पहुंचकर वह देखने और अपने विश्वासों को दृढ़ करने लगा। बहुत देरतक वह सूखे पत्ते और टहनियों की उलट पुलट करता रहा, और फिर जहांतक अपनी दूरबीन से बन पड़ता वृक्ष को देखता रहा। वृक्ष के जड़ के पास, पृथ्वी पर एक पत्थर का टुकड़ा पड़ा था। वह उसपर कुछ देर तक दृष्टि गड़ाए रहा। अंत को उसको उठाकर वह ऐसे स्थान में निकल आया जहां सम्पूर्ण पद-चिन्ह लुप्त थे और बोला--

"भेदिया ! यह बड़ा दिलचस्प मामला है, मैं ख्याल करता हूं कि, यह सामने वाली झोपड़ी उसी लड़की की है। मुझे अब वहां जाना चाहिए, क्योंकि उस लड़की से दो एक बात पूछना है। यह काम करके फिर भोजन के लिए रवाना हो जाऊंगा।"

"इस वार्तालाप के, दस मिन्ट बाद, हम लोग गाड़ी में बैठकर घरके लिए रवाना हो गए। अजयसिंह भी उस पत्थर के टुकड़े को हाथ में लिए हुए बोलाः—भेदिए ! समझते हो यह क्या है ? इसी से खूनका काम पूरा किया गया है।"

भेदि०। "मैं तो ऐसा निशान पत्थर में कोई नहीं देखता।"

अज०। "हां ! चिन्ह तो कोई नहीं है।"

भेदि०। "तो फिर तुम कैसे कहते हो ?"

अज०। "इसके नीचे घास उगी हुई थी, जिससे प्रगट होता है कि, यह थोड़ेही दिनसे वहां फेंका गया है और इसका शक्ल भी उस जख्म से बिलकुल मिलता है।"

भेदि०। "और खूनी कौन है ?"

अज०। "खूनी एक लम्बा आदमी है, उसका बायां हाथ बेकाम है अर्थात वह उससे कुछ काम नहीं कर सकता और वह बाएँ टांग से लंगड़ाता भी है। उसकी पोशाक भूरी है। वह डबल बूट पहनता है ! और वह

स्वदेशी सिगार अपने होल्डर में रखकर पीता है और मोंटे धार का चाकू अपने जेब में रखता है। और भी बहुतसी चीजें ऐसी हैं जिन्हें हमने मालूम किए हैं, किंतु जांच की सहायता के लिए इतनाही बहुत और काफीहै।"

"भेदिए ने मुसकराकर कहाः-

"अफसोस है कि, अभीतक मैंने कुछ निश्चय नहीं किया (धीमी आवाज में) कदाचित जो कुछ तुम कहते हो वही सही हो, किंतु अभी तक मुझे................"

अज०। (बातकाटकर) तो फिर क्या ? अपने ढोल की अपनी अपनी राग। मुझे इससे कुछ मतलब नहीं। तुम अपनही बात को सत्य समझे हो किंतु मुझें अपनी ही पर विश्वास है। अब मेरा काम, केवल दो पहर का और है, शायद शामकी गाड़ी में इलाहाबाद को लौट जाऊं।"

भेदि०। "तो क्या इसको अधूराही छोड़ जाओगे?"

अज०। "अधूरा क्यों ? पूरा करके जायँगे।"

भेदि०। "किंतु यह झमेला।"

अज०। "इसको पूरा कर दिया। झमेला कैसा ?"

भेदि०। "फिर खूनी कौन है ?"

अज०। "जिसकी होलिया अभी मैंने बयान की है।"

भेदि०। "वह है कौन ?"

अज०। "इसकी कोई ऐसी जरूरत नहीं है।"

"इसपर भेदिया अपने मोढ़े को हिलाकर कहने लगाः—

"मैं एक बुद्धिमान मनुष्य हूं, सब लोग यहां मेरी बड़ी इज्जत करते हैं, मुझसे तो ऐसी बेहुदगी होही नहीं सकती कि, मैं एक लंगड़ा आदमी ढूंढता फिरूं। यदि मैं ऐसा करूं भी तो लोग मुझे दिल्लगीही में उड़ा देंगे।"

अज०। (बहुत धीरे से) तुम न सही। तुम्हारे पिता और पितामह तो ऐसा करेंगे। अच्छा सलाम! मैंने तुम्हपर सम्पूर्ण भेद प्रगट कर दिया। अब जाने के पहिले मिलूंगा।"

छठवां भेद

"विचार का पुष्टिकरण।"

"यह कहकर अजयसिंह और मैं डांक बगंला को लौट आए और भोजन किया गया। अजयसिंह का चेहरा उदास और सोंचसागर में डूबा हुआ था। देखने से ऐसा प्रतीत होता था मानो सोंच सागरकी तरंगें इसे डबो रही हैं और बोला:—"विजयसिंह! अपनी कुर्सी जरा आगे करलो। मैं तुमसे कुछ बातें किया चाहता हूं। इस समय मैं बड़े सोंचसागर में डुबा हुआ हूं। कुछ समझ में नहीं आता। शायद तुम्हारी परामर्श से कुछ काम निकल जाय।"

मैं–" हां हां आप कृपा पूर्वक कहें मैं सुनने और उत्तर देने को प्रस्तुत हूं।"

अज०। "बहुत अच्छा। इस, महादेवसिंह के मालिमे

के सबंध में जो बड़ा पेंचीला है। मुझे और तुम्हें खूब विचार करना चाहिए। इसके पहिले यह भी सोंच लेना चाहिए कि, तुम इसके विरुद्ध और मैं पक्ष में हूं। एक बात तो यह कि, विश्वनाथसिंह ने महादेवसिंह को देखे बिना जो 'कूई' के शब्द का प्रयोग किया। दूसरे यह कि, वह तुरंत चूहे की मौत मर गया। यही दोनों बातें वास्तविक और सत्य प्रतीत होती हैं और इन्हीं के सहारे वृक्ष रूपी विचार पर चढ़ना चाहिए"मित्र! यह तो प्रगट ही है कि, यह आवाज़ उसने अपने लड़के को बुलाने के लिए नहीं प्रयोग किया था जहांतक उसको मालूम था कि महादेव अभी तक नहीं आया है। यह प्रभुकी लीला थी कि, वह उस आवाज़ को सुन रहा था। "कूई" के शब्द से वह किसी को बुला रहा था जिससे वह मिलने गया था। तुम जानते हो कि "कूई" एक रंगूनी शब्द है। और इसे वहां के रहने वाले प्रयोग करते हैं। इससे यह साफ़ साफ मालूम होता है कि, जिस आदमी को वह बुलाना चाहता था वह रंगून में रह चुका था।"

मैं—"उसके अचानक मर जाने के विषय में तुम्हारी क्या राय है?"

अज०। "मरने के समय, विश्वनाथ के मुंह से जो शब्द निकलते थे, इससे वह अपने मारने वाले का नाम बतला रहा था, किंतु अत्यंत कष्ट के कारण साफ २न कह सका।"

मैं—"यह तो बड़ा विचित्र मामला है ।"

अज० । "निसन्देह ! अब तीसरी बात ध्यान करने योग्य है जो महादेव ने कहा है कि "भूरी चीज़" वास्तव में वह खूनी का कोट ही था । इसके अतिरिक्त वह मनुष्य वहांही का रहने वाला है क्योंकि वहां विदेशी लोग एका-एक नहीं जा सकते ।"

मैं—"हां, यह बात भी ध्यान देने योग्य है ।"

अज०।"इसके बाद मेरी आजकी जांच आती है। तुम्हें खूब मालूम है कि मैंने उस जगह के एक एक तिनके को ग़ौर के साथ देखा है। मुझे इसीसे सब बातें मालूम हुई हैं तुम मेरे जांच के तरीके को जानते ही हो, जो ध्यान पर निर्भर रहती हैं ।"

मैं—" मुझे विश्वास है कि, तुमने उसकी लम्बाई का पता उसके लम्बे लम्बे पैरों से लगाया होगा और उसके जूतोंके चिन्ह भी उसकी लम्बाई का पता बताए होंगे।"

अज० । " हां इस विषय की सब बातें उसके जूतेंही से मालूम हुई हैं ।"

मैं—"उसके लंगड़ापन को तुमने कैसे जाना ?"

अज० । यह तो पूर्ण रूप से प्रगट है क्योंकि उसके बाएँ पैर के चिन्ह दहिने की अपेक्षा कम उगे हुए थे इससे मालूम होता है कि, वह बाएँ पैरपर कमजोर देता है, इसीसे लंगड़ा मालूम हुआ है ।"

मैं–" यह किस तरह मालूम हुआ कि, उसका बायां हाथ नाकाम है !"

अज०। "वह चोट, जो विश्वनाथसिंह के सिर पर लगाई गई थी बाई तरफ थी, इसलिए सम्भव है कि, किसी दहिने हाथ वाले ने लगाया हो। जिस समय बाप और बेटे परस्पर वादा विवाद कर रहे थे उस समय खूनी पेड़ के नीचे खड़ा हुआ सिगार पी रहा था। मैंने यह बात सिगार की राख से मालूम कर ली और उसीको सूंघ कर स्वदेशी और विदेशी का भी निर्णय कर लिया। राख से थोड़ी दूर पर काटा हुआ सिगार भी पड़ा मिला, जिससे मैंने जान लिया कि, उसका पीनेवाला होल्डर का भी प्रयोग करता है।"

मैं–"तुमने उसकी मोटी धारवाली छूरी का कैसे पता लगाया ?"

अज०। " उसका इस प्रकार पता चला कि काटा हुआ टुकड़ा साफ़ नहीं था इससे मालूम हुआ कि, चाकू तेज नहीं किंतु मोटे धार का है।"

मैं–"मेरे प्यारे मित्र ! तुमने उसके (खूनी के) चारों तरफ ऐसा जाल फैला दिया है कि, उसका बचना असम्भव है और एक बंदी को ऐसा बचाया कि, मानो उसके गलेसे फांसी की रस्सी काट दी, मैं समझ........"

"मैं अपनी बात पूरी भी नहीं करने पाया था कि

बंगला का एक आदमी एक व्यक्ति को अपने साथ लिए हुए आया और बोलाः—" यही हैं मिस्टर हरिहरसिंह!"

"जो मनुष्य भीतर आया था, वह अनजान मालूम होता था, उसके सुस्त लंगड़ाते हुए पैर, झुके हुए कंधे साफ साफ बतला रहे थे कि, इसकी विशेष आयु बीत चुकी है। उसके बेतरीके की चाल से मालूम होता था कि, यह भी एक खास-तबियत का आदमी है। उसकी बेक़ायदे की दाढ़ी, भूरे बाल, झुकी हुई भौहों से उसके बल और बुद्धि का पता लगता था। किंतु उसके मुंह की रंगत उदास और चेहरा पीलापन से बदल गया था। उसके नाक के अगल बगल के स्थान नीले हो गए थे इन सब बातों से मुझे मालूम हो गया कि यह किसी भयानक रोगमें ग्रसितहै।"

अज०। "कृपा पूर्वक फर्श पर बैठ जाइए। मेरा पत्र तो आपको मिल गया होगा।"

हरि०। " जी हां मुझे आपका पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि तुम यहां आकर मिलो।"

अज०। "मैं तुम्हारे यहां स्वयं इस लिए नहीं आया कि लोग किसी बात का सन्देह करेंगे।"

हरि०। " तुमने मुझे देखने की चाह की।"

"यह शब्द उसके मुंहसे धीरे धीरे निकल रहे थे। उसकी थकी और कमजोर आंखें जासूस अजयसिंह के चेहरे पर फिर रहीं थीं।"

"इसका विशेष उत्तर अजयसिंह ने मुंह सेन कह-कर इशारोंही से दिया कि, मैं विश्वनाथसिंह के खूनके विषय में सब कुछ जानता हूं।"

"बुढ़े हरिहरसिंह का सिर यहीं से आप पृथ्वी की तरफ झुक गया और स्वयं उसके मुंह से यह शब्द निकलने आरम्भ हो गए। "हे परमात्मा! मुझे बचाओ!! मैं निरपराध युवा को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाना चाहता। मैं शपथ खाकर कहता हूं कि, जिस समय उसको किसी प्रकार की हानि पहुंचनी सम्भव होगी, उसी समय मैं सब सत्य सत्य कह दूंगा।"

अज०। "तुम्हारे मुंहसे ऐसे शब्द सुनने से मुझे बड़ी प्रसन्नता प्राप्त हुई।"

हरि०। "हाय जगदीश्वर! यदि मेरी बेटी ने मेरी गिरफ्तारी का हाल सुना, तो उसके प्राण उसी वक्त निकल जायँगे।"

अज०। "नहीं, नहीं, ऐसा नहीं होगा।"

हरि०। "क्यों?"

अज०। "मैं कोई सरकारी तौर पर तो नहीं आया हूं, मैं समझता हूं कि, मुझे यहां बुलाने वाली तुम्हारी ही बेटी है जिसने मेरा सब खर्च सरकार में दाखिल करके मुझे यहां बुलवाया है। किन्तु महादेव को अवश्य निर्दोषी ठहराना मेरा काम है।"

हरि०। "मै कई वर्षों से एक भयानक रोग में ग्रसित हूं। डाक्टर मेरी जिन्दगी केवल एक महिना और बतलाता है। मैं आप से प्रार्थना करता हूं कि आप मुझे मकान के छतही तले मूंदे दें।"

" जासूस उठकर मेज़ पर जा बैठा और हाथं में कलम कागज लेकर बोलाः—

"अब मुझे तुम सत्य सत्य बतला दो। मैं तुम्हारे सब हालों को लिखूंगा और इसपर तुम हस्ताक्षर करोगे और विजयसिंह साक्षी के लिए उपस्थितही हैं। मैं तुमसे प्रतिज्ञा करता हूं कि इसको उस समय न्यायालय में पेश करूंगा जब वह किसी प्रकार से न छूटेगा।"

हरि०। ईश्वर तुम्हें प्रसन्न रक्खे। अब मैं थोड़े दिन का मेहमान हूं, परन्तु यह नहीं चाहता कि, मेरी प्यारी मनोहरलता (उसकी बेटी का नाम था) को किसी प्रकार का दुःख पहुँचे। अब मैं सब बातों को आपके सामने विस्तार पूर्वक सुनाता हूं लीखिये।

सातवां भेद

"हरिहरसिंह का जीवन रहस्य।"

"तुम उस मृतक को नहीं जानते, वह बड़ा भयङ्कर, कुटिल और दग़ाबाज आदमी था। हे परमात्मा! ऐसे मनुष्यों के हाथों से तूं सबको बचा। बीस साल से वह मुझपर अधिकार रखता था और उसीने मेरे जीवनको आपदपूर्ण बना दिया था। सबसे पहिले मैं तुम्हें यह बतलाता हूं कि, मैं किस प्रकार उसके अधिकारमें आगया था।"

जवानी के समय में, मैं बड़ा बलिष्ट और साहसी मनुष्य था। बुरी संगतों ने मुझे औव्वल दरजे का शराबी और ऐयाश बना दिया था। मेरे पास तो कोई ज़ायदाद थी ही नहीं। अंतमें मैंने बुरे ढंग से धन कमाना आरंम्भ किया और थोड़ेही दिनों मे प्रसिद्ध "क़ज्जाक" बन गया। मेरे साथ छः आदमी और थे। मेरा प्रधान लक्ष स्वंतत्रता से जीवन निर्वाह करने का था। मेरा काम सड़क परके लड़कों, सवारों, और पथिकों के लूटनें का था उस समय मेरा नाम शेरसिंह था।"

"एक दिन आधी रात के समय, मैं और मेरे साथियों ने सोने और चांदी से भरी हुई एक गाड़ी पर आक्रमण किया, जिसके छः सिपाही रक्षक थे। इधर मैं भी छही था। दोनो तरफ के लोग बराबर थे, परन्तु मैंने पहिलेही

आक्रमण में चार सिपाहियों को गिरा दिया। इसके पहिले कि, मैं इतने धनसे अपने डेरे को पवित्र करूं कि मेरे तीन साथी भी मारे गए। मैंने अपना पिस्तौल गाड़ीवान के सिर पर लगा दिया। ईश्वर की सौगंध! कि उस गाड़ीवान अर्थात इसी विश्वनाथसिंह को मारा दिया होता परन्तु मैंने उसे छोड़ दिया। मैं देख रहा था कि, वह मेरे मुख मंडल को पहिचान रहा है कि समय पड़ने पर पहिचान सकूं। इतने में वह मेरे कहने से राजी हो गया और सम्पूर्ण धन मेरे हाथ आया! मैं निर्भयता से बनारस की तरफ लौटा। बनारस में पहुंचने पर मैंने अपना हिस्सा अपने साथियों से बांट लिया और निष्कंटक जीवन निर्वाह करने के लिए, यहां के जमींदार से जमींदारी खरीद ली और आनन्द से रहने लगा। यहां पर मैंने अपना विवाह भी किया। यद्यपि मेरी स्त्री ने शीघ्रही मृत्यु पाई किंतु मुझे दिल बहलाने के लिए प्यारी मनोहरलता को छोड़ गई। मैं निष्कंटक और निर्भयता के साथ अपना जीवन निर्वाह कर रहा था कि मिस्टर विश्वनाथसिंह आ धमके।"

"एक दिन मैं शहर को गया था कि, विश्वनाथसिंह मुझसे मिला। न उसके शरीर पर कोट और न पांव न जूता था। उसने मुझसे कहाः—"प्यारे मित्र मुझपर दया करो, मैं और मेरा बेटा तुम्हारे घरमें दासों की तरह

रहेंगे, यदि तुम मुझको कष्ट दोगे और मेरा कहना न मानोगे तो जान रक्खो कि, यह बनारस है, पुलिस प्रत्येक समय मुज़रिमों की ताक में लगी रहती है कुशल न होगा।"

"मिस्टर अजयसिंह! जब यहां इनको कोई बात पूछनेवाला भी नहीं था, तबसे आजतक ए मेरी जमींदारी पर मुफ्त के मालिक रहे। जब इन्होंने देखा कि मैं इन के दम में आ गया, तो ए मुझे और भी दबाने लगे। निदान जो जो चीज़ ए मांगते मुझे अवश्य लाचारी की दशा में देनी पड़ती थी। ज़मीन, घर, धन दौलत इत्यादि से इन्हें परिपूर्ण कर दिया। अंत में इन्होंने मुझसे एक ऐसा पदार्थ मांगा जो मुझे देना अस्वीकार था। वह चीज यही मेरी प्यारी मनोहरलता थी।"

"महादेव, उसका लड़का भी नवयुवा, इधर मेरी प्यारी मनोहरलता भी किशोर अवस्था को प्राप्त चुकी है। जब बिश्वनाथ ने देखा कि, मेरा पैर दिन दिन घसका चला जा रहा है तो उसने मेरे सम्पूर्ण विभव को अपनाने के लिये यही उपाय उत्ताम समझा कि, महादेव का विवाह मनोहरलता से हो जाय। किंतु मैं इसके बिलकुल विरुद्ध था मैं नहीं चाहता था कि, एक दरिद्र और मेरेही द्वारा पोषित मनुष्य मेरे सम्पूर्ण वैभव का मालिक बने। अंत में तमाम बातों को निर्णय करने के लिए बरुणा नदि वाला ही स्थान स्थिर किया, क्योंकि वह दोनों के पास में स्थित है।"

"जब मैं वहां पहुंचा, तो विश्वनाथ अपने बेटे महादेव को विवाह करने के लिए बिबश कर रहा था। इसी कारण दोनों में खूब वाद विवाद हो रहे थे, मैं सिगार में दियासलाई लगाकर वृक्ष के नीचे खड़ा हो गया। और उनकी बातों को सुनने लगा। अंत में उनकी बातों से मुझे अत्यंत क्रोध हो आया और मैं अपने मनमें सोंचने लगा कि, मानो उसने मेरी प्यारी मनोहरलता को बाज़ारी औरत समझ लिया है। इन बातों से मुझे इतना दुःख हुआ कि मैं उसका वर्णन नहीं कर सकता। मुझे अपने जीवन का कुछ परवाह ही न था, मैंने तुरंत उसपर एक वार कर दिया और वह बेतरह मर गया। उसकी चीख को सुनकर उसका लड़का लौटा। जो चला जा रहा था। उसको देखकर मैं एक वृक्ष के नीचे छिप गया था।"

"महानुभाव! यही सब सच्ची सच्ची बातें थीं जिनको मैंने आपसे वर्णन कर दिया है अब आप जो चाहे सो करें।"

"इसपर अजयसिंह ने अपना लिखा कागज दिया और उसपर बुड्ढे हरिहरसिंह ने हस्ताक्षर करके कहा—"आप इस कागज को क्या करोगे?"

अज०। यदि तुम्हारी अवस्था और स्वास्थ्य की तरफ ध्यान दिया जाय, तो मुझे कुछ करना न चाहिये और मैं ऐसाही करूंगा भी। किंतु तुम समझ रक्खो कि, तुम्हें इस मामिले का जवाब, सर्व श्रेष्ट-न्यायालय में देना

पड़ेगा, जिसके सामने यहांके न्यायालय तुच्छ से भी तुच्छ हैं। मैं तुम्हारे इस दस्खती-इज़हार को अपने पास रक्खूंगा यदि महादेव किसी प्रकार से न छूट सका तो लाचारी से ए कचहरी में पेश करने पड़ेंगे। यदि महादेव बच गया, तो सम्भव नहीं कि, कोई जीवधारी व्यक्ति इसे देख सके। तुम्हारा वृतान्त मेरे पास सदा रक्खा रहेगा, चाहे तुम जीवित रहो या मर जाव।"

"इसपर खूनी बुड्ढे ने अत्यंत खुशी से झुक झुक कर सलाम किया और कहने लगा कि ईश्वर तुम्हें इस उपकार और दयालुता के बदले में उन्नति के शिखर पर चढ़ा देगा और सदा प्रसन्न रक्खेगा।"

"यह कहकर वह उठा और पुनः एक बार अपने सिर को पृथ्वी में लगाकर प्रणाम कहता और लंगड़ाता हुआ चला गया।"

आठवां भेद

"परिशिष्ट"

"उसके चले जाने के उपरान्त कमरे में सन्नाटा छा गया और कई मिनटों के बाद मेरा जासूस यो कहने लगा:- "परमात्मा मेरी सहायता करे। भाग्य भी आदमी के साथ कैसे कैसे खेल खेलती है। वास्तव में! मुझे आजतक ऐसे मामले से भेंट नही हुई थी।"

न्यायालय में मेरे परम मित्र अजयसिंह के केवल इजहारही पर महादेवसिंह छोड़ दिया गया। अनेक यत्न करने पर भी बुड्ढ़ा हरिहरसिंह एक महिने से अधिक न जी सका। दोनों प्रेमी अर्थात महादेव और मनोहरलता आनन्द से जीवन निर्वाह करते हैं और उस स्याह बादल से बचे हुए हैं जो किसी समय उनके ऊपर छाया हुआ था।

प्यारे पाठकगण! अब मेरी कहानी सम्पूर्ण हुई यदि आप लोगों की दया और सुरुचि रही तो आशा है कि, दूसरी कहानी जो इससे भी बढ़ चढ़कर है और जिसका नाम "सभा रहस्य" वा "भेद पूर्ण सभा" है लेकर आप लोगों की सेवा में उपस्थित होऊंगा।

विज्ञापन।

उपन्यास बहार।

हिन्दी भाषा के हितैषियों और प्रेमियों को विदित हो कि मैंने उपरोक्त नाम का एक अत्युत्तम मासिक पुस्तक पहली माह्न एप्रेल सन् १९०७से निकलना निश्चय किया है, जो रायल बारह पेजीके चौबीस पृष्ठोंका होगा और जिस्में एक से एक बढ़ कर मनोहर चकित और स्तम्भित कर देने वाले उपन्यास रहेंगे, यह काम मैंने लाभ की इच्छा से नहीं किन्तु हिन्दी भाषा की उन्नति और उसके प्रेमियोंके मनोरञ्जनके लिये करना विचारा है और सर्वसाधारणके फायदेके लिये इसका मूल्य भी केवल डाक व्यय के सहित) मात्र रक्खा है। इसके साथही यह भी निश्चय कर लिया है कि, इसके पाठकों को प्रत्येक वर्ष किसी न किसी स्थान के युद्ध की पुस्तक उपहार स्वरूप दिया करेंगे।

अब हिन्दी-प्रेमियोंसे सविनय मेरी यही प्रार्थना है कि वे एक रुपया मात्र का कुछ भी ख्याल न करके, मेरी सहायता और हिन्दी भाषाकी उन्नतिसे मन न मोड़ें किन्तु मुझे उत्साहित करके धन्यवाद के भागी बनें। जिन महाशयोंको इसका ग्राहक बनना हो वे नीचे लीखे हुए पतेके अनुसार सूचनादि व मूल्यादि भेजें।

सर्व साधारण का कृपाभिलाषी।

मैनेजर-	और
उपन्यास बहार आफिस	कई उपन्यासों के लेखक।
रांजघाट, बनारस।	बाबू जयरामदास।